आरती श्री गंगा जी की (१)

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता ।। ओ३म् जय...
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता ।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता ।। ओ३म् जय...
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता ।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता ।। ओ३म् जय...
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता ।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता ।। ओ३म् जय...
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता ।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता ।। ओ३म् जय...

।।श्री गंगा-वन्दना ।।

पापापहारि दुरितारि तरंगधारि । शैलप्रचारि गिरिराज गुहाविदरि ।
झंकारकारि हरिपाद रजोडपहारि । गंगा पुनातु सततं शुभकारि वारि ।।

विवरण

हे गंगा मइया ! आपकी जय हो । जो भी मनुष्य आपका ध्यान करता है, अपने मनानुसार फल को प्राप्त करता है । चन्द्रमा के समान आपकी चमक है, तथा
आपसे स्वच्छ एवं शुद्ध जल की प्राप्ति होती है । जो भी आपके आश्रय में आता है, वह मनुष्य तर जाता है । आपने सगर के पुत्रों को तारा है, जो सारी दुनिया जानती है । आपकी कृपा से ही सारा संसार सुखमय हो पाता है ।

जो भी प्राणी एक बार आपकी शरण में आ जाता है तो वह यम के बंधनों से
छुटकारा पाकर भगवान के परम पद को प्राप्त कर लेता है । आपकी

आरती जो मनुष्य नित्य स्म से गाता है, सहज स्म में सेवक वही होता है एवं वह आपकी इस आरती को गाने से मोक्ष को पा लेता है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.